रात्रि क्लास 19/12/68 :- अब एक की याद में बैठे हो वा एक को तीनों रूपों में याद करते हो? बैठे हो या चलते-फिरते तीनों को याद करना अच्छा है। प्रैक्टिस पड़ जावेगी, जितना राइट वे में याद करेंगे उतना ही खुशी आती रहेगी, मुस्कराते रहेंगे। तुमको सीखते-2 तो बहुत टाइम हुआ है। दिन-प्रतिदिन प्वाइंट्स भी मिलते रहते हैं। योग का बल भी मिलता रहता है। प्वाइंट्स भी मिलती रहेगी। फिर तुम बहुत अच्छा समझा सकेंगे। अच्छा गैलप करेंगे। तुम्हारा नाम भी अच्छा होगा। तुमको भी खुशी होगी अभी हम अच्छी रीत समझते हैं; क्योंकि तुम्हारे में बल आता रहता है। अभी बाप को याद करो, इसमें नई एडिशन होती है, बाबा बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। अर्थ सहित। बरोबर बाबा पढ़ाते भी हैं। योग भी सिखलाते हैं। जिस्मानी पढ़ाई में योग की बात नहीं होती; परन्तु टीचर साथ योग रहता ही है। बाबा भी टीचर है। बाप कोई बच्चे का टीचर भी हो सकता है, बाबा लौकिक बाप के पास पढ़ता भी था। 5 वर्ष बाप के पास रहा भी फिर 5 वर्ष पढ़ा भी बाप के पास, फिर इंग्लिश पढ़ा न सका, तो फिर दूसरा टीचर मिला। गुरु से जो सीखते थे तो उनके पास बनारस में गए। शिव काशी विश्वनाथ गंगा बस यह मंत्र। तो उनको भी कहते थे ऐसे मंत्र कहो। अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं थे। फिर भी सिखलाते थे। यह बातें गुरु सिखलावे। बाप था। टीचर भी बना। फिर गुरु जाकर किया। तो वही सिखलाते थे। फिर अपने कारखाने में लग गया। कुछ न कुछ बाप भी था, टीचर भी था, यह तो बाप, टीचर, पूरा सद्गुरु भी है। यह ज्ञान की समझानी तो अभी तुमको मिलता है, जबकि हम देवता बनते हैं। तो दैवीगुण धारण करने से ही बहुत टाइम लगता है। तुम बच्चे तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हो, तो मेहनत लगती है। क्रोध भी है ना। इस पर भी विजय पानी है। संगदोष में क्रोध भी आ जाता है। अभी तो तुमको सेफ्टी है। जो घर-गृहस्थ में रहते हैं तो बच्चों को सिखलाने आँखें भी दिखानी पड़ती है। (हाथी का मिसाल) तुम बच्चों को भी पाला जाता है ना। कल्प-2 बच्चों की पालना की है। बाप यहाँ पालना करते हैं। मुख्य है यह बात। याद करो, दैवीगुण धारण करो। जबकि देवता बनना है तो दैवीगुण ज़रूर चाहिए। खबरदारी रखनी पड़ती है। कर्म-इन्द्रियों से कुछ न हो। सभी तरफ से बुद्धि हटाकर मुझ तरफ लगा दो। मालूम तो (प)ड़ा है बाप की श्रीमत पर घर जाना है ज़रूर। पढ़ाई भी पढ़नी है। अभी भी पढ़ाई ही साथ जावेगी। सिद्ध होता (है) आत्मा जो सीखकर जाती है वह धारण करती है। अभी है भी यही पढ़ाई मुख्य। गीता में भी है ना मन्मनाभव। (मैं) तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। योग से पाप भस्म होंगे। पढ़ाई भी पढ़ाते हैं। यह बच्चों की बुद्धि में ...ना है। बाप सिखलाते भी हैं, अपना परिचय भी देते, रचना के आदि-मध्य-अंत का राज़ भी समझाते हैं। बच्चों ..... याद से ही तुम्हारे पाप कट जावेंगे। बाप है पतित-पावन। तुम सीख गए हो। झट बुद्धि में आ जाता है। न... की बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। यहाँ एक-एक अक्षर का अर्थ समझना है। बेहद का बाप नई सृष्टि रचते हैं।

19/12/68 3

बाप तो समझते हैं बाकी याद तो जब आवे तब कहे ना हमको याद करो। और कोई ऐसे कह न सकेंगे। बाप ही समझाते हैं। स्वदर्शनचक्र दिखाते हैं तो इस पर भी बाप समझाते हैं। 84 के चक्र को याद करना है। जितना-2 समझ में बैठता जाता है, बच्चों को खुशी भी होती रहती है। कई बच्चे शुरू से आए, दूसरा कोई संग था नहीं, तो स्थिरियम रहे। फिर यहाँ आए संग मिला तो भाग गए। कुछ बच गए। कोई तो झाड़ के झाड़ थे फिर संग में कोई की बाँह गई, कोई की टांग गई..... कई तो करोड़पति भी बन गए हैं। छोटी-2 बच्चियाँ मुरलियाँ भी चलाती थीं। अभी करोड़पति बन गए हैं। वह याद थोड़े ही आवेगा। भूल जाते हैं फिर बाहर वालों का संग न रहे तो वह अवस्था जल्दी अच्छी हो सकती है। जो सुनते हो वह उगारते रहो तो खुशी भी होगी और पक्का होता जावेगा। मुख से झट निकलेगा। रूप-बसंत की कथा भी है ना। गुलबकावली की भी कहानी है। माया बिल्ली पासा उल्टा कर देती है। युद्ध चलती है। कोई शूर्पणखाएँ भी ऐसी होती हैं। विख बिगर रह नहीं सकती हैं। कोई तो झट झूठी दे देती है। तुम अपना जीवन बनाओ। सारा मदार पढ़ाई पर है। धनवान बनना होता है।

वजन भी कर सकते हो यहाँ से होकर बाहर जाते हैं मास दो में फिर फर्क पड़ जाता है। दो-तीन मास हुआ तो फिर वह अवस्था न रहती है। याद करने की कोशिश करते हैं फिर भी भूल जाते हैं। इसको लड़ाई कहा जाता है। एक सेकण्ड की बात बेशक है; परन्तु जब सुनते रहें तब पक्का हो जाए। दिल भर न जाना चाहिए। सुनते-2 पक्का होते जावेंगे। साथ-2 सर्विस करते रहे तो बहुत उन्नति हो। देखा गया विलायत में एक जोड़ा बचा है, दूसरे भी ऐसे-2 वृद्धि को पावेंगे। सन्यासी भी कितने हो गए हैं। तुम्हारे पास नशा है। बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दिया है। यह भी तुमको मालूम पड़ा है। समझाया जाता है कल्प पहले भी तुमने समझा है फिर समझते हो। कच्चे हैं तो भागन्ति हो जाते हैं। कोई कहते हैं हम कभी नहीं जावेगे और सचमुच चले जाते हैं। यह एक युक्ति है। पक्का करने लिए भी बाबा कब युक्ति से कहते हैं, माया से खबरदार रहना, नहीं तो डंस लेगी। कहते हैं हम पूरा पुरुषार्थ करेंगे। हम बाप से पूरा वर्सा ज़रूर लेंगे। ऐसी मिठाई तो कब मिलने की है नहीं। सेन्सीबुल बच्चों के लिए बहुत सहज हो जाता है। कोई थोड़ा समझेंगे, कोई कम। अनेक कुजाती भी आते हैं। यह भी बुद्धि चाहिए समझने की। जैसे बिच्छू नरम चीज़ पर ही डंक लगाती है। बाप भी कहते हैं पत्थर बुद्धियों पर टाइम वेस्ट मत करो। वह अपने कुल का है नहीं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

प्वाइंट्स :- तुम बच्चों को दैवीगुण भी धारण करनी है। ऑरफन बन लड़ना-झगड़ना नहीं है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे-2 फर्स्ट बच्चों को भी आपस में लड़ा देती है। देह-अभिमान में लाकर लड़ना-झगड़ना सिखला देती है। आपस में लूनपानी हो पड़ते हैं। महारथी बच्चों की तो अच्छी रीत माया (लाख)खाल उतारती है। ऐसे मत समझो हम तो बहुत होशियार हैं। बहुत होशियार को भी माया पछाड़ती है। देह-अभिमान में आने से बाप को भूल जाते हैं। ऐसे मीठे बाप को तो न भूलना चाहिए ना। स्त्री पति को भूलती है? पति मर जाता है तो भी उनको याद करती रहती है। यह तो बेहद का बाप तुमको पढ़ा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ तुम मुझे याद नहीं करते हो। माया भुलाकर कोई न कोई उल्टा काम कराए देती है। चूहे मिसल काटती ऐसा है जो पता ही नहीं पड़ता है। इसलिए बाप फिर भी कहते रहते हैं अपन को आत्मा समझो, मुझे याद करो। औरों का भी कल्याण करो। बाप का पैगाम दे दैवीगुण धारण कराओ; परन्तु ड्रामा प्लैन अनुसार कम पद ही पाना है, तो कर ही क्या सकते हैं। कल्प-2 नहीं पढ़ते हैं। अभी भी न पढ़ेंगे। सिद्ध हो जाता है आगे कल्प भी नहीं पढ़े थे। ऐसी चलन थी। नाम-रूप, देश-काल, सभी वही रहेंगे। कल्प-2 का पुराना स्वभाव है, सो कल्प-कल्प ऐसे ही चलते रहेंगे। अच्छा, ओम।